Q Discuss the date of Kanishka I and his place in history.

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद कुषाणों ने भारत की बिखरी राजनीति को पुनः एकता के सूत्र में बांधने का सफल प्रयास किया जिसके कारण इतिहास में इन को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है कुषाणों का साम्राज्य केवल भारत के अन्दर ही नहीं बल्कि भारत के बाहर तक भी फैला हुआ था। इस युग में भारत का विदेशियों के साथ सम्बन्ध स्थापित हुआ। साहित्य तथा कला की दृष्टि से भी यह युग महत्वपूर्ण माना जाता है

अब प्रश्न उठता है कि कुषाण थे कौन? कुषाणों को ~~विभिन्न~~ विद्वानों ने तुर्क, मंगोल, ईरानी तथा शक आदि जातियों का माना है चीनी इतिहास से हमें यह ज्ञात होता है कि कुषाण लोग यूचीची जाति के अंग थे। 165 B.C. के लगभग Hung-Nu (हुंगनु) नामक जाति ने पश्चिमी

चीन पर आक्रमण किया और वहां [~~वहां के~~] के शासक की हत्या कर दी। यूची निवासी अपनी रानी के नेतृत्व में आगे बढ़े और उन्होंने ~~शक~~ शक जाति को परास्त किया। वे वहां निवास करने लगे। लेकिन यहां भी उन्हें हूंगनु जाति से पराजित होकर भागना पड़ा। वे पार्थिया की ओर बढ़े। क्योंकि इन दिनों पार्थिया का राजा काफी निर्बल हो चुका था। यूचियों ने पार्थियन सम्राट को हराकर वहां अपना राज्य स्थापित किया। उन्होंने अपने पर्यटनशील स्वभाव का त्याग दिया। अब यूची जाति का विभाजन पांच भागों में हो गया था। इन्हीं शाखाओं में से एक सबसे शक्तिशाली शाखा का नाम कुई-शांग अथवा कुषाण था। कालान्तर में इस शाखा के शासक ने अन्य चार शाखाओं पर विजय प्राप्त कर ~~एक नये~~ कुषाण राजवंश को जन्म दिया।

इस वंश का सबसे शक्तिशाली सम्राट कुजुल कडफिस था जिसे कुषाण भी कहा जाता था यह इसके कई वर्षों तक इस राजवंश का शासक रहा। पश्चात इसका पुत्र विम कडफिस कुषाण राजवंश की गद्दी पर बैठा। इसकी मृत्यु के बाद कनिष्क कुषाण साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। यह कुषाण साम्राज्य का सबसे शक्तिशाली शासक था, इस साम्राज्य की स्थापना तथा भारतीय संस्कृति के ग्रहण करने के कारण यह सम्राट पूर्ण रूप से भारतीय हो गया।

(कनिष्क कौन था यह किस तिथि में गद्दी पर बैठा। इस सम्बन्ध में कोई निश्चित मत नहीं मिले हैं। इस सम्बन्ध में विद्वानों में सदा ही मतभेद रहा है। इस सम्बन्ध में विद्वानों ने भिन्न भिन्न प्रकार के मत व्यक्त किये हैं।

कनिष्क भारत में महान सम्राट कब हुआ, के विद्वानों में

1. ~~पहला मत~~ कैनेडी ~~फ्लीट~~ महोदय ~~का~~ है
इन्होंने कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि 58

B.C. माना है इस मत का समर्थन कनिंघम तथा फ्लीट ने भी किया। कैनेडी का कहना है कि 58 ई० पूर्व में चौथी बौद्ध संगिति कनिष्क द्वारा ही कराई गई थी और इसी उपलक्ष में उसने विक्रम संवत की स्थापना की थी

लेकिन कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि 58 B.C. मानना उचित नहीं प्रतीत होता है, क्योंकि चौथी बौद्ध संगिति में अश्वघोष ने स्वयं भाग लिया था किन्तु उसने अपने किसी भी ग्रंथ में संवत स्थापना का उल्लेख नहीं किया है।

(2) फ्लीट ने भी कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि 58 B.C. ही माना है इन्होंने कनिष्क को कुषाण वंश का प्रथम शासक और कडफिस को बाद का शासक माना है लेकिन यह मत भी असंगत प्रतीत होता है, क्योंकि कडफिसस की मुद्रायें तांबे

की है जबकि कनिष्क की सोने की। यदि हम यह मान लें कि कनिष्क कडफिसस से पूर्व का शासक था तो यह भी मानना पड़ेगा कि कुषाण वंश में पहले सोने की मुद्रायें चलाई गई बाद में तांबे की। यह क्रम अस्वाभाविक प्रतीत होता है।

3. सर जान मार्शल ने कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि 125 अथवा 144 ई० माना है क्योंकि इस समय नये संवत का निर्माण हुआ था। इसने द्वितीय शताब्दी के द्वितीय चरण तक शासन किया था सुई विहार के एक लेख से प्रतीत होता है कि सिन्धु घाटी के निचले प्रदेश के कुछ भाग पर कनिष्क का राज्य था। जूनागढ़ के अभिलेख से पता चलता है कि रुद्रदामन ने 130 से 150 ई० तक सिन्धु तथा सौवीर पर शासन किया था। महाक्षत्रप के रूप में यहां किसी अन्य शासक का उल्लेख नहीं मिलता है। अतः यदि कनिष्क ने द्वितीय शताब्दी के मध्य में शास-

शासन किया था तो सिन्धु के निचले प्रदेश
तथा भूमि विशाल पर रुद्रदामन तथा कनिष्क
का राज्य किसी भी प्रकार साथ-साथ
नहीं ~~हो सकता~~ होगा।

4. डा० मजुमदार ने 248 ई० को कनिष्क के
राज्यारोहण की तिथि माना है। इस समय
कनिष्क ने कलचुरि, त्रैकूटक तथा
चेदि ~~संवत की~~ संवत की स्थापना
की।

लेकिन यह मत भी सर्वमान्य नहीं है
क्योंकि विभिन्न स्रोतों से पता चलता है
कि कुषाणों के अंतिम शासक वासुदेव की
मृत्यु कनिष्क के राज्यारोहण के ठीक
100 वर्षों बाद हुई थी। अतः यदि कनिष्क
का राज्यारोहण 248 ई० में हुआ था
तो वासुदेव की मृत्यु की तिथि 348
ई० होना चाहिए। जबकि विभिन्न लेखों से
हमें यह ज्ञात है कि 350 ई० में मथुरा पर
नागों का शासक वासुदेव था, समुद्रगुप्त का

शासन स्थापित हो चुका था और यह भी ज्ञात है कि इससे पूर्व लगभग एक शताब्दी तक मथुरा पर यौधेयों और नागों का शासन स्थापित था।

तिब्बती

डा० मजूमदार का यह कथन तिब्बती परम्पराओं से भी मेल नहीं खाता है। तिब्बती ग्रंथों में कनिष्क को खोतन के राजा विजय कीर्ति का समकालीन बताया गया है जो 248 ई० के बहुत पूर्व हुआ था।

5. ~~सर जान~~ मार्शल ने तक्षशिला की खुदाई में एक स्तूप प्राप्त किया है जिसकी अवधि 79 ई० है। Dubreuil के अनुसार यह स्तूप कदफिसस का है। यदि यह सच होता तब तो कनिष्क की तिथि 78 ई० कदापि नहीं हो सकती थी। लेकिन इस स्तूप का ~~निर्मा~~ निर्माता देवपुत्र था और कनिष्क ने भी देवपुत्र की उपाधि धारण की थी। अतः यह स्तूप कदफिसस का न होकर कनिष्क का रहा होगा। इसके ~~अलावा~~ अतिरिक्त विभिन्न राजाओं के

लेखों से यह प्रतीत [ज्ञात] होता है कि कनिष्क ने किसी नये संवत को चलाया था जिसकी अवधि 78 ई० मानी गयी है। यद्यपि हमारे पास इस कथन की पुष्टि के लिए कोई निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं फिर भी इस कल्पना के ही सत्य होने की अधिक सम्भावना प्रतीत होती है। कनिष्क के राज्यारोहण की इस तिथि पर भी विद्वानों ने कुछ आपत्तियां की हैं। ~~जो निम्न हैं~~

Para 1. विद्वानों की सबसे पहली आपत्ति है कि कनिष्क कुषाण वंश का था उसके द्वारा चलाये गये संवत् को शक सम्वत क्यों कहा गया। यह विरोध उस समय तक उचित था जब कुषाणों को मंगोल या तुर्क समझा जाता था। आज इन्हें शक जाति की ही एक शाखा माना गया है। कनिष्क की मुद्राओं पर अंकित भाषा भी शक जाति से ही सम्बन्ध रखती है।

Para 2. दूसरी आपत्ति यह है कि तक्षशिला से प्राप्त

79 ई० का अभिलेख इस बात को ~~प्रमाणित~~ क्यों नहीं प्रमाणित करता कि 78 ई० में कनिष्क ने किसी संवत का निर्माण किया था इसमें केवल देवपुत्र की उपाधि दी गई है।

Para 3. तीसरी आपत्ति यह है कि ~~यदि~~ कनिष्क ने 78 से 101 ई० तक शासन किया था तो वह सम्भवतः चीनी सेनापति पान चाओ का समकालीन रहा होगा जिसे पान चाओ ने पराजित किया था किन्तु चीनी इतिहास में इसका उल्लेख कहीं नहीं है।

भारत के इतिहास में कनिष्क का ~~को~~ एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। इसके समय से पुराणों की एक नई परम्परा शुरू होती है तथा ~~इसके समय से ही~~ विदेशी राजाओं के अभिलेखों में निश्चित संवत का उल्लेख भी मिलने लगा है। तिब्बती इतिहास से यह ज्ञात होता है कि कनिष्क का सम्बन्ध मध्य एशिया के खोतान राज्य से था और इसने उत्तरी भारत पर विजय प्राप्त की थी।

एक विजेता के साथ साथ कनिष्क साहित्य तथा कलाप्रेमी था। यह बौद्ध धर्म का उपासक था। बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए उसने अनेक स्तूपों तथा विहारों का निर्माण कराया था। इसके समय में देश में व्यापार की भी काफी उन्नति हुई थी।

अंततः यही कहा जा सकता है कि कनिष्क एक वीर प्रतापी तथा सफल शासक था। उसे न केवल कुषाण काल के राजाओं वरन् प्राचीन भारत के सम्पूर्ण प्रतापी राजाओं में उच्च स्थान प्रदान किया गया है।

Scanned with CamScanner